

मूक निमंत्रण

मुरली गोविंदाणी

मूक निमंत्रण

कविता संग्रह

(गीत - ग़ज़ल)

[illegible]

मूक निमंत्रण

कविता संग्रह

(गीत - ग़ज़ल)

मुरली गोविन्दाणी

मूक - निमंत्रण
(गीत - ग़ज़ल संग्रह)

कवि : मुरली एन. गोविन्दाणी

पता : एस. ए. एक्स-३४,
आदीपुर (कच्छ) गुजरात-३७०२०५.

फोन : (०२८३६) २६११५०

प्रकाशन वर्ष : सितम्बर २००७

प्रतियां : ५०० (पांच सौ)

मूल्य : ५० (पचास रुपये)

मुद्रक : स्केन कमप्यूर्टस
३, राधेश्याम अपार्टमेंट, पाटिया,
नरोडा रोड, अहमदाबाद-३८२३४०.
फोन : ३०२४६७७६ मो. ९३२७००७००२

कवर चित्र : मुकेश तिलोकाणी

प्रकाशन एवं वितरण अधिकार : मुरली एन. गोविन्दाणी

हिन्दी साहित्य अकादमी - गुजरात, गांधीनगर
की आर्थिक सहायता से प्रकाशित

प्रणय निवेदन से मुखरित मुरली गोविंदाणी

मुरली गोविंदाणी हिंदी व सिंधी साहित्य में जाना पहचाना नाम है, करुणा उपहार रिश्तन जो मरमु तथा महकियल मुर्क उनके काव्य संग्रह प्रकाशित है। आकाशवाणी से मान्य हैं, 55 कार्यक्रम दे चुके है। मेरी ही जन्म स्थली अजमेर में जन्में मेरे अग्रज गोविंदाणी से मेरा परिचय हाल ही में झूनागढ़ में आयोजिक काव्य गोष्ठी में हुआ तभी उन्होंने आग्रह किया कि उनके प्रकाशनाधीन काव्य संग्रह हेतु कुछ लिखूं। मैं मूल रूप से कहानीकार और आलोचक हूं। किंतु 'सिंधी कविता में प्रकृति चित्रण' विषय पर पी.एच.डी. करने के कारण कविता का गहन अभ्यास अवश्य किया है।

'मूक निमंत्रण' शीर्षक के इस संग्रह में मुरली ने 46 गीत और 24 ग़ज़ल समिलित किये हैं। श्रृंगार रस से पूर्ण इन रचनाओं में बेशक मुरली अपने प्रणय निवेदन को मुखरित कर पाए हैं। अधिकांश रचनाएं प्रेमाभिव्यक्ति, प्रतीक्षा, मनुहार, मूक निमंत्रण, स्वपनिल मधुरिम कुनमुनाती स्मृतियां समेटे हुए हैं।

विश्वनाथ के 'वाक्य रसात्मक काव्यस' का अनुसरण करते प्रतीत होते हैं। मुरली अपनी रचनाऔं में कवि हृदय में लहराती भावनाएं बैशक पाठक को भी भावविभोर करने में सक्षम है। मुरली का प्रणय न घरेलू अनुभव है, नहीं यौनातुरता का प्रतीक शारीरिक अनुभव अपितु अंतरंगता का दर्शन कराता है जो परिवेश के समस्त दबावों के बीच भी जीवन का ऊर्जा स्त्रोत है। उसने किसी अंध-प्रेरणा के वशीभूत नहीं अपितु अंतःप्रेरणा के वशीभूत लिखी है इसलिए उनमें सहजता का समावेश स्वतः हो गया है।

मुरली की रचनाओं में समय अंकित नहीं, सम्भव है, हाल ही में रची गयी हों किंतु उनका आधार निसंदेह स्मृतियां है। व्यक्ति समय को पार करता जाता है और विशेष घटनाएं स्मृति में जगह बना लेती हैं। समय स्मृतियों पर प्रहार भी करता है, अनेक स्मृतियां विस्मृत हो जाती है फिर भी कुछ विशेष स्मृतियों का कोष प्रत्येक व्यक्ति के पास होता है उन्हीं में से कुछ के साथ साक्षात्कार हैं मुरली की रचनाएं। 'सदियों का अलगाव' झेलता कवि प्रिय को कसम देता है 'आ भी जाओ मधुर मिलन की बेलाबीत न जाए' प्रिय के मिलने पर नयनों ने 'सपनों के अनुबंध' रोपे हैं और आसुंओ से अपनेपन के सम्बंध सींचे है। उस प्रिय की यौवन 'गंध' और 'अभिसारित अंग अंग' निरंतर याद है तथा उसके पुनः आगमन पर ही 'कवि गाएगा, नाचेगा' उसकी हर खुशी नवीन हो जाएगी।

'मूक निमंत्रण' शीर्षक कविता की बानगी प्रस्तुत है।

'बहक उठे क्यों नयन हठीले कंपकंपी सुधियों में बिखरी और अधरों की ध्वनि आतुर बाहों की अकुलाहट निखरी' ऐसी ही प्रभावी अभिव्यक्ति 'मूक साध' से भी परिलक्षित होती है।

चाहा था इच्छाएं मेरी तेरी निष्ठाएं बन जाए

और थके से नयनो से मन की कुंठाएं बह जाएं

प्रणय की यही अभियकि अधिकांश ग़ज़लो में भी दिखाई देती है।

हमने तुमको प्यार दिया जब

तुमने हर अधिकार दिया तब

जैसे अनेक उदाहरण संग्रह में उपलब्ध है। ऐसा नहीं है कि मुरली मात्र अपनी प्रणय वेदना में विचरण करता है कुछ रचनाओं में आशावाद प्रकृति चित्रण, जीवन, दर्शन, मोक्ष की अमरता 'पुरुषार्थ', 'आसूं', 'फूल और शूल', 'नव वर्ष', 'स्नेह दीप' आदि के प्रभावी चित्र मिलते है किंतु उनका अनुपात बहुत कम है - एक उदाहरण

'बूढ़ा अतीत चिपका गालों की क्रीज़ पर

और एक चीख़ उभरी उम्र की द़हलीज़ पर'

'तुतलाता गूंगापन', 'आक़ोशी लकीरें', 'मंदिर नज़र', 'वक्त की चादर', 'संकल्पों के ताबूत', 'लावे सा करंट' जैसे प्रतीक हैं। बारुदी परिवेष, पराजित, प्रतिक्षाएं 'परिवेजी सीमाएं' जैसे शब्दों का प्रयोग है। गीत में मुरली जितने स्वाभाविक सहज़ हैं उतने ग़जल में नहीं जबकि उनकी स्वीकारोक्ति है कि ग़ज़ल में आनन्द आता है।

श्री निदा फाज़िती के अनुसार हज़ार गज़ले पढ़ने के बाद एक पंक्ति लिखने की जुर्रत करनी चाहिये।

चूंकि गोविंदाणी के अंदर काव्य कला की चिनगारी तो है ही, अब सेवानिवृत है और घरेलू ज़िम्मेदारियों से भी लगभग मुक्त अपने बचपन के शौक को अभ्यास द्वारा और निखारें यही शुभकामना है। 'मूक निमंत्रण' काव्य रसिको का ध्यान आकर्षित कर पाएगा यह मेरी आशा नहीं विश्वास है।

डॉ. कमला गोकलान

'फ़र्हत' ए-५, नेहरूनगर, सांई बाबा मंदिर के पास

अजमेर - ३०६००

मो. ०९४१४२२०३७० फोन : (०१४५) २६९१३

अपनी और से :

अल्प आयु से ही लिखना प्रारम्भ किया था, सत्रह वर्ष की उम्र में ही पहली कविता लिखी। मेरे स्वर्गीय पिताजी श्री नाराइनदास (जो स्वंय सिन्धी भाषा के कवि थे) ने जब मेरी रचना देखी तो अत्यन्त आन्नदित हुए और तत्काल ही एक साप्तिाहिक पत्रिका गांधीधाम समाचार में प्रकाशित करवा दी। अपनी पहली रचना इतनी जल्दी प्रकाशित हो उससे ज़्यादा खुशी की बात और किया हो सकती है। फिर तो मेरी क़लम चलती रही और आज तक चल रही है। सिन्धी भाषा भाषी होते हुए भी हिन्दी में ही लिखता रहा, लगातार पत्रिकाओं में व आकाशवाणी से मेरी कविताएं प्रसारित होती रही। कुछ वर्षों पश्चात अपनी मात्रभाषा में भी लिखना आरम्भ किया और अब तक हिन्दी में २०० व सिन्धी में ३०० कविताएं लिख चुका हूं और आकाशवाणी भुज से मान्य कवि के रूप में पचास से ऊपर कार्यक्रम पेश कर चुका हूं।

मुख्यतः मैने गीत, ग़ज़ल व मुक्तक ही लिखे हैं। पुराने वक्त में कविता एक बंधी प्रणाली में जकड़ी हुई थी उस समय के काल में लिखने की इतनी स्वतन्त्रता नहीं थी। पर विषय तो श्रृंगार ही रहता था। जो आज भी कविताओं का विशेष विषय श्रृंगार ही है। गीत ही एसी विधा हैं जो मानव की वेदना प्रकट करने में समर्थ है, गीत काव्य श्रृंगार के प्रत्येक भाव को पूर्ण कर देता है। गीत मन की छिपी हर मीठी कड़वी कसक को अथवा भावना को साकार रूप दे सकता है इसलिए ही गीत काव्य साहित्य में अपना एक अलग ही स्थान बनाए बैठा है। दर्द और प्रेम कितने न मीठे हैं ये दो शब्द। दर्द की कसक वो ही समझ सकता है जो प्यार की परिभाषा जानता हो और जितनी आवश्यकता दर्द को प्यार की

है उससे अधिक प्यार को दर्द की आवश्यकता होती है। दोनों एक दूसरें के बिन निर्मूल है पर मूल है उनको शब्दों का रूप देकर गीतों में पिरोना। जो कवि दर्द से परिचित है उनके गीत ही लोगों को पसंद आएंगे। मैने भी अपने गीतों में श्रृंगार के साथ व्यथा दर्द व प्रतीक्षा का समावेश किया है न चाहते हुए भी अपने आप। क्यों कि श्रृंगार तो मन की भावानाओं की उपज है, वे समस्त भावनाए जब मन के किसी कोने से निकलकर मस्तिष्क में जमा हो जाती है तो स्वयम ही शब्दों के रूप में गीतों का जाल बुन जाती है।

इस संकलन में मेरी दूसरी विधा है ग़ज़ल। जो कि हिन्दी में मूलतः उर्दू से आई है। ग़ज़ल एक व्यवस्था के अंतर्गत निर्धारित छंदो व काफियों को ध्यान में रखकर लिखी जाती है। ग़ज़ल एक गाइकी की विधा है जो अपने आप लिखते समय ही संगीतमय बन जाती है। पता नहीं क्यों जितना आन्नद ग़ज़ल लिखने में आता है उतना और किसी काव्य में नहीं। मैने भी अपने मन से छंदो व काफियों के अनुसार एक संमानतर लय में ग़ज़ल लिखने का प्रयत्न किया है।

मेरे गीत व ग़ज़ल पाठकों की दृष्टी में किस कसौटी पर उतरते हैं वो तो पाठक ही जाने। जो लिखना जानता है उसका काम है सही सोच रखकर सबके आन्नद के लिए लिखना। मैने भी मन में अपनी भावनाओं को गीतों व ग़ज़ल के रूप में इस संकलन में समावेश किया है। मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि रचना पढ़ने वालों को पसंद आएगी फिर भी एक नम्र निवेदन है कि मेरी कविताओं को आंककर, अपनी कसौटी पर निरखकर, कृपया अपनी राय से अवगत कराएं क्योंकि पाठक की राय ही लेखक के भविष्य की प्रेरणा होती है।

मुरली एन. गोविन्दाण

बी. ए. (हिन्दी साहित्य

क्रम

भाग - एक......"गीत"

"जीवन है सपना"

पल भर का जीवन है सपना,
सपनो पर विश्वास न करना,
जनम मरण की आस्थाओं पर
सांसो पर विश्वास न क रना ।

सुख और दुख की बात न पूछो,
दर्द दुखों की परिभाषा है,
सांस सांस की उठती लय पर,
सुख जीवन की अभिलाशा है ।
पाप पुण्य तो स्वभाविक है,
मोक्ष अमर की बात न करना ।

पल भर के इस जीवन में,
सांसों पर अधिकार किसीका,
छाया का आकार न जाने,
हर कोई अपनें में जीता ।
आसूं तो अपने है लेकिन,
मोह जाल में कैसा फसना ।

हर कथा का अंत नहीं है,
कुछ टूटे कुछ बन जाते हैं,
यह सच है दर्पण के आगे,
कुछ रोते कुछ मुस्कराते हैं ।
जीवन के इस भ्रम जाल में,
हसते हसते पार उतरना ।

"पुरषार्थ"

"पुरषार्थ है जहां,
प्रगति है वहां।"
हों महनतकश इन्सान सभी,
यह मंत्र हमारे जीवन का।

है गीता का भी सार येही,
"कर्म किए जा - धर्म किए जा,"
न फल की चिंता करो कभी,
बस आगे आगे बड़ता ही जा।
"सुख को बांटों - दुख सहे जा,"
यह मंत्र हमारे जीवन का।

जब मन में हैं विश्वास अगर,
पत्थर से पानी पैदा कर,
हर कठिन समय पर जीवन को,
पुरषार्थ के बल पर सोना कर।
"है सत्य जहां - होगी विजय वहां"
यह मंत्र हमारे जीवन का।

नव आशा ही नव भाषा ही,
मानव मन की परिभाषा हो,
आदर्शों की संघर्षों की,
जीवन में ही अभिलाषा हो।
"खिलाता चल, नवजीवन सबको"
यह मंत्र हमारे जीवन का।

"अंजान गंध"

एक अंजान गंध
बिखर गई है - आस पास
जब से एक खबर
आपके आने की सुनी है।

बार बार अधरों पर गीत नया आए अब,
जैसे कोई कानों में वंशी बजाए अब,
भूल गया सुधियों की सुध बुध
जब से एक खबर
आपके आने की सुनी है।

लगता है मरुस्थल में भी फूल खिल गए,
आपकी आहट सुन मन के तार हिल गए,
स्वपन सा संसार रच गया,
जब से एक खबर
आपके आने की सुनी है।

कोई स्वपन्न सुंदर जैसे आखो में रचा है,
फूलों की खुशबू बन सासों में बसा है,
महक उठा यादों का उपवन
जब से एक खबर
आपके आने की सुनी है।

“ए चांद”

ए चांद .....!
जग प्रतीक्षा रत और,
तुम अब निकले हो !

पी कहां पुकार के - पपीहा सो चला,
लहरों का अुन्माद - कुछु शांत हो चला
गुज़र चुकी है रात,
होने को प्रभात -
धूमिल रोशनी लेकर
तुम अब मचले हो !
ए चांद .....!

वक्त की हर सांस - आदमी की प्यास
क्षण भर नहीं ठहरी - परिवर्तन की आस -
अक्षु जब जम गया,
साज़ जब थम गया -
हिम की वेदना से
तुम अब निखरे हो !
ए चांद .....!

इतनी प्रतीक्षा पश्चात
तुम अब निकले हो ।
ए चांद .....!

"मन की भाषा"

कोई माने या ना माने,
मन की भाषा मन ही जाने ।

लेकिन चेहरा दर्पण बनकर
सबके राज़ अुजागर करता -
चाहे कितनी पीर दबी हो
आंसू बन बहता ही रहता ।
चाहे लोग सुनाए ताने,
मन की भाषा मन ही जाने ।

बहुत संभाला कुंठित मन को
अचरा भीगा मोती छलके -
आशाओं से मांग सजाकर
लाज की बदली अंतर सिमटे ।
गंध चुराई - फूल को पाने
मन की भाषा मन ही जाने ।

दर्द सजा जब हृदय सेज पर
नयन बेचारे गुमसुम गुमसुम
मौन अधर संकेत की सुध पर
कांप अुठते है हरदम हरदम ।
शब्द भेजे है पीड़ा लाने
मन की भाषा मन ही जाने ।

"जुदाई का जादू"

तेरे प्यार की गहराई
अब तक मैं आंक न पाई
पाकर पाती अलगाव की
जाने क्यों आंख भर आई ।

मालूम न था, प्रतीक्षा के पलों में ऐसा भी होता है -
रातें गुज़रे करवटें बदल बदल दिल बार बार रोता है-
कैसे बीतेगी अब तो
स्याह रात की तनहाई ।

किया मालूम इन्तज़ार के पल इतने बोझिल होते हैं -
यादों की रात इतनी लम्बी - दिन कठोर से लगते हैं-
अधरों पर अुभरकर जाने
कहां से, इक आह सी आई ।

सच कहती हूं जो मैं जानती जुदाई के जादू को,
तुम्हे बंद कर लेती अपनी दोनो पलकों में बेकाबू हो
तुलसी पर दिया जलाए
चौखट पर आस लगाई ।

"जब तुम मिले"

जब आंख से आंख मिले
तब आंगन फूल खिले
बज अुठे प्यार की धुन
जब सांस में सांस घुले।

नयनो ने रोपे हैं
सपनो के अनुबंध-
अश्रुओं से सींचे हैं
अपनेपन के सम्बंध

जागे प्यार भरे सपने,
अुभरे गीत नशीले ।

मन की फुलवारी में
जो भी चाहा मैने -
सपनीले मौसम में
सब कुछ पाया मैने -

प्यार समाया मन में,
मिटे सब शिकवे गिले।

मन का मन से जब बंधा
इक प्यार भरा सम्बंध-
फैल गई नस नस में
तब मनचाही सुगंध

पलकों के साथ चले,
सपनो के सिलसिले ।

"सदियों सा अलगाव"

आखिर क्यों कर - गहराता जाता है,
तेरे मेरे बीच - इक सदियों सा अलगाव -
किया एसा कोई मरहम नहीं उपलब्ध
जो पनप अुठे प्यार व भर दे दिल के घाव ।

यह जो साथ निभाया हमने,
कोई चुराए पल हैं शायद,
समर्पण की चरम सीमा पर
टूट चुका वह दिल है शायद ।

धुंध भरे सपने जो देखे - तो पाया
हर दिशा, हर मोड़ पर बिखराव ही बिखराव ।
आखिर क्यों कर......... ।

भूल गए हम याद नहीं कुछ,
सिलसिले प्यार के खत्म हुए,
मिटाकर यादों की सीमाएं
बुझ गए मन के जलते दीए ।

लकीरें प्यार की हाथों तक से मिट गई,
रह गया जीवन में अब भटकाव ही भटकाव ।
आखिर क्यों कर......... ।

“पलकों के मंच पर”

उम्र के एकांत क्षणो में ,
जब थक कर हो जाता हूं चूर,
आधी अधूरी ज़िंदगी में,
तेरी याद आती है हजूर।

यह सच है पलकों के मंच पर
आसुओं की इक भरी सभा है,
पलती जिसमें विरह और व्यथा
पीड़ाओं की इक खास अदा है ।
विरह के अनजान लम्हों में
स्वपन बन कोई आएगा ज़रूर।

फूलों और भवरों के बीच
कभी आपस में मैल न आया,
सीप में बंद मोती ने कभी
अपना दुखड़ा किसे सुनाया ।
मेरी नज़रों से हरदम,
क्यों साजन तुम रहते दूर।

अपना अपना भाग्य सभी का
अपनी होती माथे की रेखा,
कोई पलकों की सेज बिछाए
कोई विरह में जलते देखा ।
सच कहता हूं - प्रीत है पागल
और प्रेमी मिलने को मजबूर।

"कसम है"

तुम्हे कसम है -
आ भी जाओ.... यह मधुर मिलन की बेला
बीत न जाए -
मन खाली का खाली
रीत न जाए ।

क्यों कि,
येही तो प्यार के पल है,
स्वयं श्रृंगार के पल है,
किसी की याद में रचकर
ये ही अभिसार के पल है ।

इसलिए,
जुल्फों की छांवों में
प्यार की पनाहों में
देर तक सोने दो,
आज रात खोने दो ।

और इसलिए भी,
क्यों कि मुझे याद है
प्रणय मिलन के मधुर क्षणों में
जाने क्यों चुपचाप रहें हम
लाज से पलकें थी भारी भारी
रात भर अनजान रहे हम ।

और चूंकि,
रात आधी घुल चुकी है
चांद भी छिपने लगा हैं,
तुम्हारी आस का हर पल
घुटन सी बनने लगा है ।

इसलिए
अब तो न तड़फाओ - आ भी जाओ
तुम्हे मेरी कसम है आ भी जाओ ।

"मन की दास्तां"

खामोशी तो दर्द की दवा है
पर दर्द तो दिल की दास्तां है।

सुप्त भावनाओं को झकझोर कर -
नेह के सपनों की डोर तोड़ कर -
वेदना तो है नयन के छोर पर -

पर वेदना तो आंसुओ की जुबां है,
और दर्द तो दिल की दास्तां है।

रोशनी का चांद सभको है भाता -
अधियारे से पर कोई जुड़ न पाता -
सभकी चाहत तो प्रीत का नाता -

पर प्रीत तो पीर की अदा है,
और दर्द तो दिल की दास्तां है।

ज़िंदगी बस मौत का ही सपना है -
रुप असे भ्रम जाल की घटना है -
क्षणिक मोह पर मरना और मिटना है -

पर आस तो रुप की दुआ है,
और दर्द तो दिल की दास्तां है।

“आमंत्रण’

जब से मिले,
नयन से नयन तुम्हारे -
    मेरे सपनो के बादल को,
    तब से पूर्ण विराम मिल गया ।

जब से मिले,
अधर से अधर तुम्हारे -
    मेरे जीवन के आंचल को
    जीने का आयाम मिल गया ।

जब से मिले,
शब्दों को स्वर तुम्हारे -
    मेरे पैरों की पायल को
    नृत्य का तूफान मिल गया ।

जब से मिले,
चाह़ से राह तुम्हारी -
    मेरे उर सागर के घायल
    पंछी को परवाज़ मिल गया ।

जब से मिले,
प्यार को मौन निमंत्रण -
    मेरे मंदिर की मूर्ती में
    साक्षात भगवान मिल गया ।

"दर्द अुभरता जाता है"

व्यथित मन को समझाऊं कैसे
दर्द उभरता जाता है।

धड़कनों का राग रुक गया,
प्यार का पैगाम रुक गया,
थम गई पायलों की छम छम -
जीने का आयाम रुक गया।
आकुल मन बहलाऊं कैसे
दर्द उभरता जाता है।

रह गए सब सपने अधूरे,
मिलन आस की राह निहारे,
नाशाद हो गया जीवन सारा -
गीत मेरे तक हुए न पूरे।
बहते आसूं - रुकवाऊं कैसे
दर्द उभरता जाता है।

बीत रह रही रात सुहानी
फीकी लगे संगीत रागनी,
खामोश सो गई दुनिया सारी -
बहला सके न मधुर चांदनी।
प्रेम पहेली - सुलझाऊं कैसे,
दर्द उभरता जाता है।

"खुली किताब"

गर पढ़ना चाहो तो पढ़ लो मुझको,
सामने रखी खुली किताब हूं मैं ।

हर पृष्ठ पर रचा है
शब्दों का बेजोड़ दर्पण,
हर शब्द से जुड़ा है
भावना का प्रथम चरण -
हर चरण के अंत का महताब हूं मैं,
सामने रखी खुली किताब हूं मैं ।

इस स्याही में घुला है,
प्रणय व शांति का लेखा,
एक एक पंक्ति जैसे हो
क्षमा व विनय की रेखा -
कांटो मध्य महकता गुलाब हूं मै,
सामने रखी खुली किताब हूं मैं ।

एक एक रचना की तह में
मान भरी सुलझी भाषा है,
मुखपृष्ठ से अन्तिम तक
सदगुणों की परिभाषा है
हरएक प्रश्न का स्वंय जवाब हूं मैं
सामने रखी खुली किताब हूं मैं ।

"अमानत"

मैने सपनो का घर बनाकर
अपने प्यार की अमानत रखी थी।

पर जानता नहीं था कि
सांझ की बयार आकर
तोड़ देगी द्वार मेरा,
और फिर यूं साथ मेरे
दो कदम चल कर झटककर
कर देगी उपहास मेरा !

और अब तो जल रहा हूं
मोम सा मै गल रहा हूं

भावनाओं की तपिश में
सांस मेरी घुट रही है
साधनाओं की कशिश में
साध मेरी लुट रही है ।
बह रहा हूं आंख्र से में
ढल रहा हूं - जल रहा हूं ।

अब सपने बिख्रर के रह गए हैं
दर्द के तार उभरकर रह गए हैं
कोई साथ चलने को तैयार नहीं है
जिनके साथ सपनो की सोंगात बंधी थी
मैने सपनो को घर बनाकर
अपने प्यार की अमानत रख्री थी।

"ले चल"

मुझे जाना है उस पार
ए राही !
ले चल मुझे वहां..... ।

जहां सूर्य की प्रखर किरणे
अलक जाल सा बुनकर
समेट लेती है अपने में
सारी सागर की लहरों को ।

जहां स्नेह के मधुर मिलन से
संपूर्ण संसार हो परिपूर्ण
न हो जहां कोई असमानता
मनुष्यता हो मनुष्य में पूर्ण ।

जीवन के अुस मोड़ पर
जहां फूल महकते रहते हैं
ले चल मुझे वहां जहां
भाव परिवर्तति होते हैं ।

जहां स्नेह के करों में सुधा
और व्यक्ति के हाथ में विकास
मुर्दा मानवता को भी जहां
कोई देता हो जीवन विश्वास ।

ले चल मुझे वहां ए राही
ले चल मुझे वहां ।

“आंसू”

विश्व वेदना की आंसू पहचान ।

कोमल गाल पर ये गर्म आंसू -
लुड़कते मोती से ये नर्म आंसू -
मन पीड़ा के ये मरहम आंसू ।

विरही तू न सकेगा कभी जान
कि विश्व वेदना की आंसू पहचान ।

मन की भावनाओं के साज़ पर -
विश्व सवेंदनाओ के आवाज़ पर -
किसी के नयनों से टप टप कर -

गालों पर बहे आंसू बन अनजान,
कि विश्व वेदना की आंसू पहचान ।

नारियों का है हथियार आंसू -
प्रेमियों का ये इज़हार आंसू -
विधवाओं का तो संसार आंसू -

दीन दुखियों की बस आंसू पहचान
विश्व वेदना की आंसू पहचान ।

"फूल और शूल"

जो कोमल था - वह फूल बना,
जो चुभ गया - वह शूल बना ।

जिसने अपना सौरभ फैलाया -
उसने फूल की संज्ञा पाई,
जो पुण्य का पहरेदार बना -
उसने शूल की संज्ञा पाई,
यह मूल तथ्य जगत को
क्यों समझ न आया अब तक -
क्यों मस्तक पर लगा चंदन -
गिरने पर धूल की संज्ञा पाई ।

सागर का तो विशाल अस्तित्व -
क्यों उसका भी कूल बना

मयूर बादलों से प्रणय ले,
मस्ती से पंख फैलाते हैं,
सावन के मेघ जिधर चाहें
जा रस अपना छलकाते हैं,
पर भूल कर भी मुझ पर
आज तक मेघ न बरसे हैं -
तट सिन्धु पर खड़ा फिर भी
उस पार नयन न पहुंच पाते है ।
जीवन की अनंत आकुलताओं में,
मैं अपनेपन की भूल बना ।

"मूक निमंत्रण"

भर मूक निमंत्रण नयनो में
पलकों का पहरा हटा दिया....... तो

ना जाने कितने शलभ क्यों
जलने को तैयार हो गए,
और न जाने क्यों भ्रमर भी
कलियों का श्रंगार हो गए ।

बहक उठे क्यों नयन हठीले
कपकपी सुधियों में बिखरी,
और अधरों की ध्वनि आतुर
बाहों की अकुलाहट निखरी ।

एसी भर दी प्रीत नयनो में
बिखराकर मधु हास हसी का..... कि

सुंदर एसा हास निरखकर
निखरी यह कोमल सी काया,
अुलझी नर्म हथेली धीरे
नयनो मे रंग गुलाबी आया ।

मंत्र मुग्ध सा खड़ा रहा तब
सपनो में सोया सोया सा
नयनो ही नयनों से तुमकों
पीता रहा खोया खोया सा ।

भर मूक निमंत्रण नयनो में
पलकों का पहरा हटा दिया..... जब ।

"मूक साध"

जब से मूक साध ली,
प्रिय तुम्हारे नयनो ने.... पूछो मत,
अधरों का कम्पन क्यों खामोश हो गया।

बाहों का बंधन तोड़कर
पीर दे गए ऐसे - जैसे
भरी भीड़ में कोई अकेला छोड़ गया हो,
और साथ को तरस
रही है आंखें मेरी कि
दर्द को ही मेरे मन से जोड़ गया हो।

क्यों गीतों के गुज्जन को
खोज रही तकती आंखे.... पूछो मत,
कब आसुओं का बंधन ही आगोश हो गया।

चाहा था इच्छाएं मेरी
तेरी निष्ठाएं बन जाए
और थके दो नयनो से मन की कुष्ठाएं बह जाए,
पर प्रिय तुमने मन के
अधिकार को नहीं जाना
ना ही मेरे मूक इशारों को ही तुमने पहचाना।

क्यों सासों की सरगम भी
आज बजने को तैयार नहीं है.... पूछो मत
कब मन मंदिर का पंछी ही बेहोश हो गया।

"तुम क्या गए"

मन हुआ बेचैन - तुम क्या गए
दुःख भरे दिन रैन - तुम क्या गए ।

याद तुम्हारी जब जब उभरे
नींद नयन से रूठ गई ज्यों,
मन का कोना खाली खाली
सूना उपवन नाग ढसे ज्यों ।

छिन गया सुख चैन - तुम क्या गए
मन हुआ बेचैन - तुम क्या गए ।

जहां जहां मैं नज़र निहारूं
वहां वहां तुमको ही पाता
मन मंदिर में मूरत तेरी
बार बार जुड़ जाता नाता ।

भर भर आते नैन - तुम क्या गए,
मन हुआ बेचैन - तुम क्या गए ।

बरसे एसी आग हृदय में
मन को कोई बात न भाए
खोयी खोयी दिल की हालात
नीर नयन से बह बह जाए ।

सब कुछ किया सहन - तुम क्या गए
मन हुआ बेचैन - तुम क्या गए ।

"क्यों रूठे हो'

ऐसे क्यों रूठे हो साजन
मुझको अपने पास बुला ले,
बंद आंख में सपन संजोए
मुझे गले का हार बना ले ।

अनजानी गलती के कारण
नयन थक गए बहते बहते,
छोड़ो ये रुसवाई की बातें
बहुत हो गया सहते सहते ।

मुझसे जो भी खता हुई है,
उसकी मुझको माफी दे दो,
अधरों से भर जाम स्नेह युक्त
मुझको अपने अंग लगा ले ।

तुम्हे कसम हैं आ भी जाओ
आज प्रणय का शंख बजाकर
कब से तेरी डगर निहारूं
मधुर मिलन की हर बेला पर ।

नयनों में नव स्वागत लेकर
राह द्वार पर नज़र बिछाए
मैं तो सजी तुम्हारे लिए हो
आकर मेरी मांग सजा ले ।

"याद आती है"

अभी तक फागुन के जाने के बाद भी
याद आती है,
अपने प्यार की अठखेलियां ।

हवा में अभी तक बसी है, तुम्हारी यौवन गंध
सासों का इसरार और अभिसारित अंग अंग -
कैसे भूलें,
किसकी मान भरी रंगरेलियां ।

तुम चुप हो यह सपन सी ज़िदगी बिखरी पड़ी है,
तुम क्या रूठी यह रूपहली चांदनी फीकी पड़ी है-
मान भी जाओ,
और न दो प्यार की पहेलियां ।

सोचा न था इतनी सज़ा इक ज़रा सी भूल की
जो चुभाए तीर दिल में बार बार शूल सी -
लौट भी आओ,
और न छेड़ो पीर की कहानियां ।

अभी तक फागुन के जाने के बाद भी
याद आती हैं,
अपने प्यार की अठखेलियां ।

"लाज का घूंघट"

लाज का घूंघट उठाओ,
मौसम संयम हटाने का है -
और दिल के पास आओ
मौसम हसने गाने का है ।

यह मचलती चांदनी और
सांस क्यों अनछुई पड़ी है,
तुम चुप हो पलकें झुकाए
आज मिलने की घड़ी है ।

इस मिलन के वास्ते
हमने कितने सपने संजोए,
इस तरह यों ना शर्माओ
मौसम पास बुलाने का है ।

यह हवा बहकी बहकी है,
गुमसुम है मन की दीवारें
इस प्रणय के मधुर क्षणों में
जान बूझकर क्यों न हारे ।

सिहरते सांस की लय पर
मचलती गीत की धुन पर
अंतर की साध सुलझाओ
मौसम जी बहलाने का है ।

"ओ मेरी परछांई"

छिपी हो,
अंतर के किस कोने में
ओ मेरी परछांई ।

अम्बर के आनन में,
धरती के आंगन में,
ढूंढा तुझे हर डगर
हर गली हर सावन में -

बसी ओ,
विश्व के किस सोने में
ओ मेरी परछांई ।

कुछ पल सकाश तेरे,
सोया चिर निंद्रा धेरे,
आंख खुली हुआ भास
मैं एकाकी तुम परे -

खोजता
जगत के हर नमूने में
ओ मेरी परछांई ।

"रूप तुम्हारा"

श्यामल श्यामल रूप तुम्हारा
जैसे बदली सावन की,
महके महके सौरभ सी ज्यों
तुलसी मेरे आंगन की।

मदिर मदिर नयन तुम्हारे,
सांस सांस को खींच रहे हैं,
मधुर मधुर मुरली की लय पर
मन का उपवन सींच रहे हैं।

दर्पण को तुम यूं ना देखो
दिल का शीशा टूट न जाए
अपने पर विश्वास न दिल को
नीर नयन से छूट न जाए।

अधरों पर मुस्कान जो आए
उपवन उपवन फूल खिले ज्यों,
देह तुम्हारी खुशबू खुशबू,
स्वपन स्वपन साथ चले ज्यों।

इस रुपहले मस्त मौसम में
तुम्हें कसम है आ भी जाओ,
मन का कोना खाली कब से
आकर अपनी जगह सजाओ।

"प्यार का सिला"

बह न जाए दो आंसू मेरे
तुम प्यार का सिला देना ।।

जब दीप निशा के बुझ जाएं -
तम में अंधियारा हो जाए
जब बादलों की ओट से,
मचलकर चांद भी निकल आए -
तब चंद्रमा की मधुर चांदनी
मेरे नयनो में बसा जाना ।

चांद जब तम में डोलने लगे
लहरों पर खेल सा खेलने लगे,
और चमकती लहरों पर
अलक जाल सा बुनने लगे,
तब नयनों में प्रीत लेकर
मेरे सासों में समा जाना ।।

जब वीरान सी फिज़ाओं में
अकेलेपन से घबरा जाऊं मैं,
अंधेरी रातों में बड़ता हुआ
ठोकरें पत्थरों से खाऊं मैं,
तब बनके इक नन्हा सा दीपक
सही राह मुझे दर्शा देना ।।

"प्रातः"

भोर का संगीत थम गया
जब नव किरणों ने आंखे खोली ॥

नव प्रभात - नव जीवन लाया -
नव आशा - संदेश सुनाया,
धोर तिमिर - मिट गया तब
जब स्याह रात पर खेली
किरणों ने होली ॥

खिली कली - पंखुरिया हिली -
श्वेत फूलों से झुक गई डली,
विभा का आंचल हट गया -
जब पेड़ पलाश से निकली
पंछियों की टोली ॥

अवनि पर अब शबनम खेले,
जब बाल अरुण आखें खोले,
सागर के मन से उठे ज्वार,
जब संसृति पर छा जाए
किरणें सुनहली ॥

"नव वर्ष"

नवल वर्ष की नव आशा, स्वीकार साथी ।।

बीत गया वर्ष
फैल गया हर्ष
गली गली में छाया उत्कर्ष,
दिशा दिशा से
निशा निशा से
निकली खुशबू नव-उषा से ।
लाई खुशबू नव वर्ष का उपहार साथी ।
नवल वर्ष की नव आशा स्वीकार साथी ।।

नव आशा ही
नव भाषा ही
नूतन वर्ष की परिभाषा हो,
आदर्शों की
संघर्षों की
जीवन में ही अभिलाषा हो ।
नव खुशियों का नव वर्ष लाया अंबार साथी ।
नवल वर्ष की नव आषा स्वीकार साथी ।।

नूतन नूतन
नव अभिनंदन
नव वर्ष का स्वीकार निमंत्रण
आशीषें दो
बीते युग को,
नव युग से अभिलाशाएं लो ।
कर नव सूर्य के नव किरणों का श्रंगार साथी ।
नवल वर्ष की नव आशा स्वीकार साथी ।

"जीवन गुलज़ार बनाऊंगा"

विकल जीवन बहलाऊंगा-
लिए आस की तान,
अश्रु नयन से छलकाऊंगा-
लिए स्नेह का दान ।

सुबह ले आएगी, आशा भरे स्वर
साहिर की तमन्ना लिए खड़े स्थिर,
दीपक आज चमकाऊंगा
लिए प्रकाश-मान ।

गुञ्जन कर जाएगें - भ्रमर आज अनेक,
उन्माद छेड़ जाएगी, फूलों की महक,
बन गुलज़ार चहकाऊंगा
लिए मधुर सा गान ।

बांधे रह जाऊंगा-मीठा सा अभिज्ञान,
बन जाएगा चंचल अकुलाया सा मान,
जीवन गुलज़ार बनाऊंगा,
छेड़ ख़ुशी की तान ।

"सौंदर्य प्रेमी"

ओ सौंदर्य प्रेमी !

कुछु सुंदरता पर गीत लिखो,
शब्दों में स्नेह सा भाव निरखो ।।

रूप तो बन्धनों की सीमा से है परे
फिर कौन उसे बन्धनों में जकड़े,
हर कविता में सुंदरता भरना सीखो,
ओ सौंदर्य प्रेमी, - - - - कुछु सुंदरता पर गीत लिखो ।।

सुन्दरता मानव की उभरती इ़ष्ट है,
इ़स इ़ष्ट का आकार नही निष्ठ है,
रक्त की लालिमा तुम
उषा के आंगन में देखो,
ओ सौंदर्य प्रेमी- - - कुछु सुन्दरता पर गीत लिखो ।।

सुंदर अति सुंदरतम् जग सारा
सौंदर्य सोम्य सुंदर अति प्यारा,
संसृति के कण कण में,
प्रीत का सागऱ परखो,
ओ सौंदर्य प्रेमी..... कुछु सुंदरता पर गीत लिखो ।।

"स्नेह दीप"

आज यश की ज्योति जलाओ,
फिर प्रीत का सार मिलेगा ।।

प्रेम रस के प्रिय इच्छुक तुम
तोड़ दो बन्धनमय जीवन,
मुक्त करो मानव से तुम,
आकांक्षाों का नव जीवन ।

शांति सिर्फ शांति प्रकटाओ
फिर जीत का उपहार मिलेगा ।।

प्रेम वेदना की अमिट पीड़ा से
सांसों को गुलज़ार कर दो,
आसुंओं की घनीभूत पीड़ा में,
सुख सागर का श्वास भर दो ।

प्रेम रस का संगीत बजाओ,
फिर गीत का सार मिलेगा ।।
आज यश की ज्योति जलाओ
फिर प्रीत का सार मिलेगा ।।

"भर दो"

मेरे पलक सजल हैं अब तो
तुम इन में अनुराग भर दो,
मेरे हृदय की व्यथा में भी
तुम नेह का मरहम भर दो ।।

जीवन विकट बना तुम बिन
मन प्रसून मुरझा गया,
सिंधु समीर जो बह निकला,
तो मन तार उलझा गया ।

अश्रु मेरे बह रहे हैं अब भी
तुम आकर सान्तवना दे दो,
मन की व्याकुलताओं में
तुम दर्शन पिपासा भर दो ।।

प्रकृत मन मेरा आज भी
तुमसे आस लगाए चाह भरी
अश्रु मिश्रत नयनों में भी
प्रतीक्षा की आकुल थाह भरी ।

मेरे गीत गूंज रहे हैं अब भी,
भावों से स्वर भर दो,
शब्द भी अधूरे रह गए जो
चुन चुन शब्द अंकित कर दो ।

"मानवी उपहार"

सत्य और पूर्णता लेकर
जग जीवन का सार बनूं ।।

हर खोज का है सार
सीमा में मिल जाना
हर तृष्णा का है भार
मंज़िल ही पा जाना ।
चिर पथिक तृष्णा लेकर
मंज़िल का मैं हार बनू ।।

अस्वस्थ, अहसाय कुचंले
औ बदनसीब गरीबों की,
मन में प्यार लिए और
घृणा लिए फरेबों की,
विश्व उद्धार का भार लेकर
दीन दुखियों का यार बनूं ।।

मुझमें प्रभु भर दो शक्ति
बन सकूं मैं ऐसा व्यक्ति,
सबके दुख संताप मिटाऊं
ऐसी ही मेरी हो भक्ति ।
कि संसार में रहकर
मानवता का उपहार बनूं ।

"तुम और मैं"

ताराओं से राह बनाकर
चांदनी उतर आएगी,
धरा को फिर चूमकर
चंदा में जा समाएगी ।

सारी प्रातः फिर ढह जाएगी
जब तुम आओगी
तब मैं आऊंगा ।।

तम में फैले उजियारे की
रोशनी फिर ढल जाएगी
सुर में सजाए दीप की
दीप शिखा जल जाएगी ।

चंचल समीर फिर बह निकलेगी
जब तुम गाओगी
तब मैं गाऊंगा ।।

ऋतु सावन लेके आएगी
फिर एक खुशी नवीन,
चेहरे पर रोनक छाएगी,
जिन के मुख हो मलीन ।

हर मौज रंग खुशी का लाएगी,
जब तुम नाचोगी
तब मैं नाचूंगा ।

"प्रणय गीत"

तुम मेरी सांसों की सांस,
तुम मेरे गीतों की प्राण
कि जैसे गूंज रहा हो,
मधुर सुरों में मधुर गान ।

तुम मेरे सपनो की आशा,
तुम मेरी आंखों की भाषा,
तुम मेरे जीवन मंदिर की,
मदिर मदिर मधुर अभिलाषा ।

तुम मेरे जीवन के पथ की,
हलकी हलकी सी मुस्कान,
कि जैसे फूंक रहा हो कोई,
मधुर "मुरली" में मधुर तान ।

तुम मेरे मानस पटल की
चमकती चांद सी तस्वीर
तेरे ही आंचल से बंधी
मेरे जीवन की तकदीर ।

"रूप का दर्प"

जो इस तरह अगर
तुम्हें रूप का अभिमान न होता,
तो गली गली
मैं अजनबी सा बदनाम न होता ।।

नेह निभाकर टूटे मन से
दर्द की हर सेज सजाई
पर फिर भी मेरी पीड़ाएं
प्यार तुम्हारा बन न पाई,
जो इस तरह अगर
पीड़ाओं का तूफान न होता
तो गली गली में
मैं अजनबी सा बदनाम न होता ।।

प्रेम समर्पण करने को मैने,
मन को मन से जोड़ दिया
पर किरणों पर पहुंचा ही था,
घूंघट बादल ने ओढ़ दिया,
जो इस तरह
मैं प्यार से अंजान न होता
तो गली गली में
मैं अजनबी सा बदनाम न होता ।।

"गीत-कौन"

कौन सी सुध पाकर तृष्णा छल गई मुझे
जो शूल से भी फूल की महक आती है ।

सुख की सदैव करता रहा हूं खोज में,
भूल गया हूं अब अपने कलांत मन को
नवीन चेतना ने जब आवरण डाला
कपकपी सी आ गई तब शांत मन को,
यह कौन आज मुझमें मधुमास जड़ गया
जो सांस से भी आग की दहक आती है ।

यह किसके अधरों का मधुर राग सुनकर
फिर प्यास मेरी बढ़ रही है निरन्तर,
कोयल भी रस घोल रही है मन में,
रसभीने मधुर स्वपनों में झूमकर,
यह मन में समाई है किसकी तस्वीर
जो नयनों में सावन बन छलक आती है ।

पुरवैया भी बावरी सी लहराती सी,
आ रही चूमकर किरणों की पलकों से
जो प्यास भी बुझा सकती नहीं अधरों की
पर उलझा जाती है रसकेश अल्कों से,
यह कैसी मन में बात छिड़ गई,
जो मुर्दों से भी प्यार की चहक आती है ।

"विरह की बात"

छोड़ो प्यार भरी बातों को
अभी विरह की बात शेष है।

भीतर तह तक उमस भरी है
चारों और कुहरे का पहरा
उलझ उलझ सांसों का राही
भटक रहा ज्यों हो हरकारा,
क्यों सांसों में भरें अपनापन
अभी सांस में भरा क्लेश है।

जाने क्यों बैरी मौसम ने,
आज विरह के आंसू बौये,
हार गए बौराये बन्धन,
और घुटन ने सपने खोये,
मत रिश्तों की सांकल खोलो
अभी रिश्तों में बंद द्वेष है।

अनजानी लहरों के माध्यम
उमड़ पड़ा आखों का सागर
समझ सकूं ना उर की बातें,
भर न सके जो मन की घाघर
मन बादल के पोर पोर में
नयनों की बरसात शेष है।

"साधना"

ओ गीली हवा,
अंजुरी भर
मोती मत लुटा
साधना को
उर का एंकात बन जाने दो ।।

कितनी बार छली गई
मेरी सुधियों की ठिठुराई,
अनगिनित मोती बीधें
साधें भी है बिखराई,
पर दर्द-दवा तो न बन सका
ओ गीले दर्द-
स्वयं को
गीत की सौगात बन जाने दो ।।

आस्था के तार तार
वेदना में जल गए,
क्षितिज तक डोर बांधी
नयन तक छल गए ।
पर सपन नयन में न घुल सके
ओ शीतल नयन
परिवर्तन की
साध आसुंओं से भर जाने दो ।।
ओ गीली हवा.

"कुनमुनाता व्यवहार"

रात ने प्रात से किया - सौतेला व्यवहार,
तुतलाता गूंगापन - बौरा गया द्वार द्वार ।।

उपदेशक बन गए सभी
आवेशों से छल करने,
संविधाए बिखर गई
दर्द का समीकरण हल करने ।

पारे सा उठा ज्वार - उफनता पारावार
तुतलाता गूंगापन - बौरा गया द्वार द्वार ।।

कुनमुनती यादें ठिठुरी,
दे रही बारूदी परीक्षाएं
आक्रोश चेहरे पर उमरा
ले ले परिवेषी सीमाएं ।

विधिवित चित्र अमिट कर ढह रही मीनार,
तुतलाता गूंगापन - बौरा गया द्वार द्वार ।।

"लावे सा करंट"

अंदर ही अंदर
पिघलता - लावे सा करंट,
तारों पर लटका हुआ मन ।।

जकड़ा हुआ मौन,
शून्य सहता कौन,
कांपा लाल ईमान
संप्रेषण है टोन ।

समांतर चलती रेख-
जैसे टूटती पवन
तारों पर लटका हुआ मन ।।

संकलपों का ताबूत
विश्वास गया तोड़,
अतगाव की सीमा
संशय गया जोड़ ।

इतना कम विश्वास
कि स्पष्ट घुटन
तारों पर लटका हुआ मन ।।

“पराजित प्रतीक्षाएं”

पराजित प्रतीक्षाएं
पूछें-प्रश्न पर प्रश्न
पर उत्तर-
उत्तर तो निष्ठुर हो गए हैं ।।

कब से थामें
निसंकोच-
आठों प्रहर
प्रहरी की भांति
महीन सभ्यता का मापदंड ओढ़े
मानचित्र की भांति अटल
हताश - छली की भांति
मायावी मान्यताओं का योग भी
अस्वीकृत हो गए हैं ।।

विज्ञापित किया जाता
पहले और फिर
इकट्ठा किया जाता - चंदा
मन का ईंधन
हाथ जोड़-
संग्रह किया - तो
प्रतीक्षाएं क्षितिज से गिरी
और............ दर्द गीले हो गए हैं ।।

"आधुनिकता"

और फिर वह टूट गया
कड़ियों का साम्राज्य,
जिससे बंधा था एक
आधुनिकता का बैल ।।

श्वेत पनों पर फिर
तैरती चली गई
काली स्याही की नाव,
जिसमें बैठा था
एक बूढ़ा अतीत और आने वाला वक्त
फिर बाध्य हो गए लोग
सहने पर सहने
पाश्चात्य का घाव,
ज्यों धरतीकंप को सहती
अनछादित टूटी हुई शैल ।।

और फिर होने लगी
गोष्ठियों पर गोष्ठियां
आक्रोशी लकीरों से छाया
सब का मस्तिष्क
ज्यों साहित्यकारों के नाक में
डाल दी गई हो
एक नुकीली नकेल ।।

"वक्त का अनुपात"

नए नए प्रयोगों से
मन की मैल धुल गई,
हृदय का कपाट खुला,
वक्त के अनुपात से ।

नींद के खिंचाव से-
आंख की थकान पर
मेहन्दी सा रंग चड़ा -
उम्र की मचान पर
उम्र की मचान पर
भावना का चित्र सजा,
तृप्ति का अमृत बहा,
अधरों की पात से ।

बूढ़ा अतीत चिपका
गालों की 'क्रीज़' पर,
और एक चीख उभरी
उम्र की दहलीज पर
उम्र की दहलीज पर
फैल रहा ज़हर है,
आकुल नई दृष्टि है
पीड़ाओं के ताप से ।

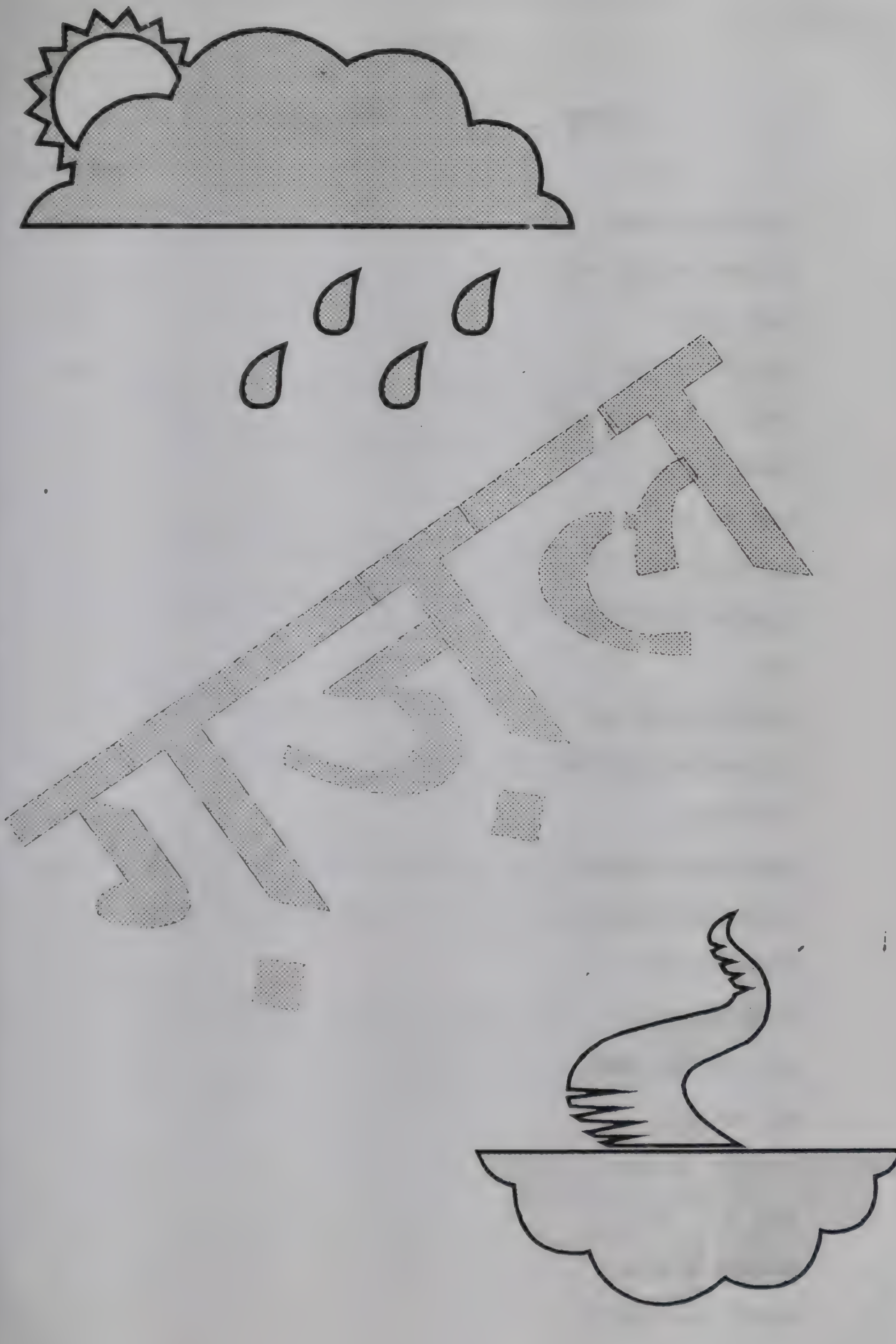
“वंशी गूंजी द्वार द्वार”

आंगन आंगन झूम उठा फिर
जब से है, प्रीत निभाई मैने ।

स्नेह कलश भर उठा आंखों में,
कली कली महक उठी पाखों में,
फिर ढलता सा चांद चढ़ गया
जब से है, प्रीत निभाई मैने ।

येही नहीं सुध अपनी खोई,
ज्यों बींध गया सपनों में कोई,
शबनम का सावन छलका है,
जब से प्रीत निभाई मैने ।

मस्ती अब तो नस नस में है,
समर्पण अपने बास में है,
वंशी गूंजी द्वार द्वार फिर,
जब से प्रीत निभाई मैनें ।


ग़ज़ल

क्रम

भाग - दो......"ग़ज़ल"

“ग़ज़ल”

तुम आती हो याद - नहीं आता है कोई़ और
जाने क्यों तब भर उठते हैं दो नयनों के कौर ।

इधर में परेशां, उधर तुम मोम सी जलती हो,
न पीर पिघलती है न मिलती मिलन आस की डोर ।

जीने का अहसास और दर्द सीने में भरा हो,
राम जाने कब टूटेगा - दर्दे दिल का दौर ।

तूफान की गति का ज़रा अंदाज़ा हम बताएं
बीच भंवर में नाव हो और सामने हो छौर ।

तुम किया जानो कैसी पीर उठाई़ मैने,
रह रहकर नयन ढूंढते, इ़क छोटा सा ठौर ।

"ग़ज़ल"

जो दिल को करे शांत शीतल छांव दिखा दे
जहां प्रीत पले, वो राह, वो ठांव दिखा दे ।

विरह की आग लरजती रहती है हरदम
जो शोला बन सके छोटी सी आंच दिखा दे ।

मेरी पीड़ाएं सिर्फ़ मुझ तक ही सीमित हैं
कोई तो रोशनी का नया चांद दिखा दे ।

सुनते हैं उस और दीवानों की बस्ती है,
उन परवानो में मेरा भी नांव लिखा दे ।

जहां गया मौत का डर साथ ही चलता गया,
जहां सिर्फ उजाला है ऐसा गांव दिखा दे ।

हर एक के लहू का रंग एक जैसा है,
प्यार से छलका हुआ कोई पाठ सिखा दे ।

"ग़ज़ल"

हसले गाले - मौज मना ले
रोने में रखा है किया
जीवन है इक पल दो पल का
खोने में रखा है किया।

पैसा है - मिट्टी का ढेला
आता जाता रहता है,
जाग दीवाने मोह जाल से
सोने में रखा है किया।

आदमी में प्यार भी है
और मिलन की चाह भी
फिर ज़माने भर में कांटे
बोने में रखा है किया।

सबको पता है प्यार की
पगडंडिया कितनी क़ची है
मत उलझाओ प्रेम डोर को
सपने में रखा है किया।

आजकल आप अपनी ज़ात पर
जाने क्यों लड़ते हैं लोग,
मनुष्य एक है - हिन्दु मुस्लिम
होने में रखा है किया।

"ग़ज़ल"

कुछु पाने के लिए - बहुत कुछु खोना पड़ता है,
जो हसता है ज़्यादा - उसे ही रोना पड़ता है ।

समझोतों के बल पर गर कायम है दुनिया
फिर क्यों रिश्तों के दर्द को ढोना पड़ता है।

ज़ंगलों में विचरना तो जोगियों की फितरत है
जिन्हें ही कांटों पर जीवन बिछोना पड़ता है ।

मरता है आदमी और पाता है मुक्ती,
फिर क्यों आंसूओं से मन भिगोना पड़ता है।

सुनते आए हैं - प्यार बिना वीरान है ज़िंदगी,
गर जीना है किसी को किसी का होना पड़ता है।

“ग़ज़ल”

अभी तो रात गली नहीं - भरमाने की बात किसलिए
अभी तो श़मा जली नहीं - परवाने की बात किसलिए ।

अभी तो बात अधूरी - ज़ुबा पर आने को आतुर,
नज़र से नज़र मिली नहीं - शरमाने की बात किसलिए।

अलगाव की आग में क्यों जलते आए हैं अब तक,
अभी तो ज़ख्म भरे नहीं - सहलाने की बात किसलिए ।

आपकी हर बात का - अंदाज़ ही कुछ और है,
नज़र में कुछ, ज़ुबा पर ना - बहलाने की बात किसलिए।

आपकी आहट सुन सुन, वक्त रुक गया, सांस थम गई
पास आने का मौसम है - दूर जाने की बात किसलिए।

"ग़ज़ल"

हरएक आदमी की अपनी अपनी मजबूरी है,
पर सम्बधों का ताल मेल निहायत ज़रूरी है ।

दर्दे-दिल के लिए प्यार भरे बोल ही काफी नहीं,
कोई दिल में समाए - वर्ना ज़िंदगी अधूरी है ।

चाह का तो रूप व्यापक, आह का स्वरूप भयानक,
प्रेम को बंधन में बांधना, दो दिलों में दूरी है ।

जानते हैं - भूल तो मानव के मूल का दस्तूर है,
लेकिन आलोचना की आदत सबकी कमज़ोरी है ।

आदमी को स्वयं की पहचान होनी चाहिए,
वर्ना ज़िंदगी ज़िंदगी नहीं सिर्फ जी-हजूरी है ।

"ग़ज़ल"

अपनी यादों की याद बड़ी गहरी है,
ज़िंदगी बस तेरे नाम पर ठहरी है ।

अब तो भा गई है उम्र भर की खामोशी,
मेरी हसी हसी नहीं आसूं की गगरी है।

अलगाव की आंच को चुपचाप सह गया
दर्द दिल में दबाया तो चोट उभरी है ।

क्यों कर बुझेगी जो पीर गही है मैनें,
किस किस को सुनाऊं जो मुझ पर गुज़री है ।

उम्र भर के विश्वास का किया मिला सिला,
व्यथा व अतरंग निराशा से पलकें भरी हैं ।

"ग़ज़ल"

हमने तुमको प्यार दिया जब,
तुमने हर अधिकार दिया तब।

आंखों ही आंखों से हमने,
घृणा को दुत्कार दिया तब।

गिरी रोशनी नयन नयन भर,
धड़कन का उपकार हुआ तब।

इतने पर भी मान न रहा कि,
सांसों का व्यापार हुआ कब।

पाकर तुमसे मूक निमंत्रण,
प्यार भी उपहार बना अब।

“ग़ज़ल”

किया खुशनुमा सुनहरी शाम है,
हर तरफ तुम्हारा ही नाम है ।

गुलाब सी ताज़गी लिए तेरे ये लब,
ज्यों शराब से भरे हुए दो जाम हैं ।

रंग और फूल की किया बातें करें,
तुम्हारे आगे चांद तक बेनाम है ।

मदिर नज़र जिसके नाम करो तुम अर्पित,
उनके लिए तो दुनिया स्वर्ग समान है ।

सच कहता हूं गुलों की खुशबू से ज़्यादा,
गुलशनो में तेरी ही चर्चा आम है ।

"ग़ज़ल"

हाय मैं शर्म से लाल हो गई,
कली थी खिलके गुलाब हो गई ।

मस्ती रची नस नस में जब से,
छुई मुई थी लाजवाब हो गई ।

बंध गई सम्मोहन की डोर से जब,
आपने छुआ महताब हो गई ।

अंग अंग में बसी यौवन गंध,
नींद भी मेरी ख़्वाब हो गई ।

संयम की रेख़ पर सुध बुध किसलिए,
लाज का पहरा उलटकर चांद हो गई ।

“ग़ज़ल”

मन जिस किसीका आपस में मिलता नहीं,
फूल उनके आंगन कभी खिलता नहीं ।

सहमे सहमे से उस समाज में आज,
राग मानवता का कोई गुनता नहीं ।

वक्त की चादर हर द्वेष भुला देती है,
क्यों समझोतों की बात कोई करता नहीं ।

अफवाहों और अपवादों के बीच तो,
बात सरकार तक की कोई सुनता नहीं ।

किसी से किस कदर अपेक्षा रखे कोई,
आज, अपने से भी कोई डरता नहीं ।

"ग़ज़ल"

जो मुस्कराकर नयनों से सपने चुराकर चले गए,
समझो तो वो इक तीर सा दिल में चुभाकर चले गए।

आते जाते इधर उधर जो बेगाने से फिरते हैं
लगता है वो अनजाने ही सब कुछ लुटाकर चले गए।

सोते सोते रात रात भर सारे तारे गिनते रहना
एसी कैसी अगन लगाई जो मुझे रुलाकर चले गए।

आंखों की भाषा तो केवल प्रेम पुजारी ही समझे,
जाने क्यों सुन बात प्यार की नयन झुकाकर चले गए।

दहशती दुनिया के अंदर सबके मन में डर का नाता
कुछ मुस्काए फिर शर्माए कुछ नेह निभाकर चले गए।

"ग़ज़ल"

तेरे चेहरे जैसा कोई चेहरा नहीं है,
मेरी आंखों जैसा कोई भंवरा नहीं हैं ।

आईने के सामने सब संवरते हैं मुस्कराकर,
क्यों कि दिल के द्वार पर कोई पहरा नहीं है ।

सपने से बांधो चाहे रूठने का वास्ता दो,
चंचल मन किसी बात पर कभी ठहरा नहीं है ।

क्यों आंख भर आती है अलगाव की बात पर,
इन्तज़ार का घाव कोई गहरा नहीं है ।

इतना आसां नहीं मन का हर बार रपट जाना,
मन खुद्दार है, शतरंज का मोहरा नहीं है ।

“ग़ज़ल”

जहां देखो वहां अशांत मय अनीति भरा व्यवहार है,
मानव मन में प्यार कम ज़हर भरी तलवार है ।

अपने अपने धर्म में डूबे अपनी चाल अलग चलाएं
एसे कट्टरपंथियो के आगे सरकार तक लाचार है ।

भूल चुके हैं शायद हम अपनी गौरवमयी आस्थाएं,
पूज्य पवित्र स्थलों को भी बना दिया हथियार है ।

विश्वासों की चादर ओड़े सब साथ मिले मिल बैठे,
जात पात की बात, पर बन मन में क्यों अंधकार है ।

सदियों से पीते रहे सब गंगा जल अमृत समझकर
साफ स्वच्छ गंगा के जल में अब मुर्दों की भरमार है ।

“ग़ज़ल”

आखिर कब तक कौन किसी का, उम्र भर इन्तज़ार करे,
सारी रात तारे गिन गिन कर नींद नयन से रहे परे ।

सोचता हूं यार प्यार बीच एसी भी किया है मजबूरी,
अधरों पर संयम का पहरा नयन नीर से भरे भरे ।

नयनों व अधरों को तुमने एसी कैसी दूरी दे दी,
मन की पीड़ा अपनी ही परछाइयों से अब डरे डरे ।

ज़िंदगी के मोड़ पर जब अपने को पाता हूं तन्हा,
एसे लगे है ठीक हृदय बीच कोई भोंके छुरे छुरे ।

गंध फूलों की महक महक कर मन के सारे तार हिला दे,
मेरी तो तुम बात न पूछो दुनिया तुम पर मरे मरे ।

"ग़ज़ल"

मेरे ज़ख्मों का आकर कुछ हिसाब तो रखो,
इतने जो मिले गम उन पर किताब तो लिखो ।

कोई मुझसे पूछे, तेरे हुस्न की दास्तान
काटों मध्य मुस्कराता गुलाब तो देखो ।

बात एक नई चली है प्यार में चुप रहना,
चुपचाप मन की चाहत का शबाब तो परखो ।

प्रतीक्षा व अलगाव प्यार के दो प्रतीक हैं,
इन्तज़ार के आन्नद का कुछ ख्याल तो निरखो ।

कुछ साथ बिताए क्षण कोई भूलता नहीं,
यादों के इस अहसास का कुछ मर्म तो समझो ।

"ग़ज़ल"

तेरे सासों की सुगंध समेटकर
फूल प्यार का महकने लगता है ।

तेरी यादों के स्वपन संजोकर
मन का पंछी चहकने लगता है ।

तेरे अधरों के कम्पन की लय पर
दिल का विश्वास बहकने लगता है ।

तेरे नयनो का निमंत्रण पाकर
मयूरी मन थिरकने लगता है ।

तेरे आने की खुश खबर सुनकर
दिल बार बार धड़कने लगता है ।

तेरी बाहों का बन्धन बांधकर,
मन मिलन को मचलने लगता है ।

"ग़ज़ल"

दर्द सीने में दबाए - मत फिरो
आग सी दिल में जलाए - मत फिरो ।

स्याह रात में - अनबोली बात पर
प्रीत पलकों में समाए - मत फिरो ।

हर शै न आंको - रुपयों के मौल से
रूप हाटों पर बिठाए - मत फिरो ।

बहुत खलने लगा अब मौन तुम्हारा
राज़ का पर्दा लगाए - मत फिरो

कौन जाने सांस के इतिहास को,
आस जीने की सजाए - मत फिरो ।

किया भरोसा प्यार के विश्वास का
लाज का घूंघट उठाए मत फिरो ।

"ग़ज़ल"

वादे पर वादा होता गया
मैं तेरे प्यार में खोता गया ।

इतने अधिक पास आ गए तुम
विश्वास के सुमन पिरौता गया ।

चाह सनम की इस कदर बड़ी
अलगाव पर नयन भिगोता गया ।

आंख मिचौली सा यह यौवन
सपनो के मोती संजोत गया ।

प्रीत की राह में इस तरह अुलझा
सोचा था कुछु - कुछु होता गया ।

"ग़ज़ल"

मन में उमड़ता है जब किसी के चाह का अहसास
सब कुछ हसीन लगने लगता है तब अपने आस पास ।

खामोश ज़िंदगी मेरी थे शांत मन के उदगार,
मदहोश निगाह जो उमड़ी तो जगी प्यार की प्यास ।

पहले एसी बात न थी न था किसी का इन्तज़ार,
एसी क्यों कर लगन लगी मन रहने लगा उदास ।

एसा लगे है अब तो तुम दूर होकर भी साथ हो,
मन के दर्पन में सजने लगा है कुछ खास खास ।

सब कुछ फीका लगने लगा इक चांद मन को भाए,
जिसकी दिलकश चांदनी ज्यों मधुर फूलों का वास ।

"ग़ज़ल"

ईमान बेचना और मौत में कोई फर्क नहीं हैं,
"सब चलता है" स्वंय संतुष्ट होना कोई तर्क नहीं है ।

प्यार भरे विश्वास को अपने अहम से तौलना,
उससे बुरा दुनिया में दूसरा कोई नर्क नहीं है ।

दिल के फैसले वकीलों की अदालत में नहीं होते,
वे जो अटल हैं, उन्हें किसी का कोई दर्क नहीं है ।

झोलियों में भर भर लोग सच का सौदा करते हैं,
व्यापारी तो बहुत मिले पर कोई वितरक नहीं है ।

अक्सर सुनते आए है "अतीत भूल आगे की सोच"
जिसने न समझी यह बात वो समय का सेवक नहीं है ।

"ग़ज़ल"

चेहरे पर नकाब लगाए मुस्कराते हैं लोग,
यों आप अपने आप को भरमाते हैं लोग ।

मौसम की भांति सबका व्यवहार बदल जाता है,
येही कारण है अपनो से कतराते हैं लोग ।

मनुहार की घातें किसी से कही नहीं जाती
अंदर ही अंदर जल जल के सह जाते हैं लोग ।

आज कल इस जहां में, प्यार की कीमत नहीं है,
फिर भी प्यार का पैगाम सुन शरमाते हैं लोग ।

हर किसी की बात से अविश्वास की बू आती है
दोस्तो 'दूर से सलाम' बजा फरमाते हैं लोग ।

“ग़ज़ल”

जो सपनों में रचे बसे, भगवान बन जाते हैं
वो आप अपने आप ही, पहचान बन जाते हैं ।

प्रीत की राह पर - सपनो की डोर तोड़ कर
जो दर्द जान लेते हैं, मुस्कान बन जाते हैं ।

मय की मस्ती का अंदाज़ ही कोई किया जाने,
जो साथ मिले, बैठे, वो महमान बन जाते हैं ।

एसे ही बंधकर सबकी सम्मोहन की डोर से,
प्यार की सौगात पा सब धनवान बन जाते हैं ।

जीवन की राह में कई साथी, मिले, बिछड़े,
जो मन पारस को छू ले ईमान बन जाते हैं ।

"ग़ज़ल"

तुम आती हो याद नहीं आता है कोई और
जाने क्यों बन भर उठते हैं दो नयनो के कौर ।

इधर मैं परेशां हूं - उधर तुम मोम सी जलती हो,
न पीर पिघलती है न मिलती मिलन आस की डोर ।

जीने का अहसास और दर्द सीने में भरा हो,
राम जाने कब टूटेगा - दर्दे दिल का दौर ।

तूफान की गती का ज़रा अंदाज़ा हम बताएं,
बीच भंवर में नाव हो और सामने हो छोर ।

तुम किया जानो कैसे कैसी पीर उठाई मैंने,
रह रह कर नयन ढूंढते - इक छोटा सा ठौर ।



परिचय

नाम : मुरली नारायणदास गोविन्दाणी

जनम : दिनांक 15 जुलाइ 1948-अजमेर

शिक्षा : बी.ए. (हिन्दी साहित्य), राष्ट्रभाषा कोविद

व्यवसाय : निवृत प्रबन्धक- भारतीय खाद्य निगम

पत्ता : एस. ए. एक्स-34,
आदीपुर-370205 (कच्छ) गुजरात.
दुरभाष : 02836-261150

साहित्यक प्रविृतियां :

(1) प्रकाशित पुस्तक : (1) रिश्तन जो मरमु (ग़ज़ल सिन्धी भाषा में)
(2) महकियल मुर्क (कविता-सिन्धी भाषा में)
(3) मूक निमंत्रण (कविता- हिंदी भाषा में)

(2) अप्रकाशित पुस्तक : (1) उड़ाम (कविता सिन्धी भाषा में)
(2) मन दर्पण (कविता हिन्दी भाषा में)

(3) आकाशवाणी का मान्य कवि, अब तक 55 कार्यक्रम प्रसारित हो चु

(4) सम्पादन : हिन्दी त्रिमासिक पत्रिका "अर्चना" का दो वर्ष तक ।

(5) विविध पत्रिकाओं में हिन्दी और सिन्धी भाषाओं में कविताएं व कहानियां प्रकाशित । तथा कई कवि समेलनो में कविताओं का पठ